UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 9, No. 7 July, 2022

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

अनुक्रमणिका

	बाल श्रमिकों की पारिवारिक, आर्थिक स्थिति का समग्र अध्ययन : फिरोजाबाद जिले के विशेष सन्दर्भ में **डॉ0 चित्रा चन्द्रा एवं मोनिका उपाध्याय**	1-4
	अभिनवगुप्त का जीवन और रचनायें (एक शिल्पकार के दृष्टिकोण से) **दिनेश पाल**	5-10

UGC Approved Journal No. 48416
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 9, No. 7, July, 2022

Impact Factor : 6.0
ISSN : 2393-8358

अभिनवगुप्त का जीवन और रचनाये (एक शिल्पकार के दृष्टिकोण से)

दिनेश पाल
सहायक आचार्य, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हि.प्र.

संक्षेप

अभिनव ऐसे दार्शनिकों में से हैं जिनकी टिप्पणी के पश्चात किसी और टिप्पणी की आवश्यकता नहीं होती अभिनव गुप्ता एक ऐसा नाम है जिससे सभी तंत्र साधक तथा कला सौंदर्य के विद्वान परिचित है इस शोध पत्र में अभिनव गुप्त के जीवन तथा उनकी रचनाओं पर एक शिल्पकार के दृष्टिकोण से चिंतन किया गया है क्योंकि उनकी रचनाओं से स्पष्ट होता है कि अभिनव गुप्त ने जो भी टिप्पणी या रचनाएं की हैं वह या तो साहित्य जगत से संबंध रखती हैं या नृत्य व संगीत से किंतु यहां यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि अभिनव गुप्त के दर्शन का स्पष्ट प्रभाव मूर्ति तथा चित्रकला पर देखने को मिलता है।

महत्त्वपूर्ण शब्द - अभिनवगुप्त, सौदर्य, दर्शन।

अभिनवगुप्त (९७५-१०२५) दार्शनिक,[1] रहस्यवादी एवं साहित्यशास्त्र के मूर्धन्य आचार्य थे। कश्मीर शैव और तन्त्र के महान पण्डित होने केसाथ साथ वे संगीतज्ञ, कवि, नाटककार, धर्मशास्त्री एवं तर्कशास्त्री भी थे।

अभिनवगुप्त का व्यक्तित्व बड़ा ही रहस्यमय है। महाभाष्य के रचयिता पतंजलि को व्याकरण के इतिहास में तथा भामतीकार वाचस्पति मिश्र को अद्वैत वेदांत के इतिहास में जो गौरव तथा आदरणीय उत्कर्ष प्राप्त हुआ है वही गौरव अभिनव को भी तंत्र तथा अलंकारशास्त्र के इतिहास में प्राप्त है। इन्होंने रस सिद्धांत की मनोवैज्ञानिक व्याख्या (अभिव्यंजनावाद) कर अलंकारशास्त्र को दर्शन के उच्च स्तर पर प्रतिष्ठित किया तथा प्रत्यभिज्ञा और त्रिक दर्शनों को प्रौढ़ भाष्य प्रदान कर इन्हें तर्क की कसौटी पर व्यवस्थित किया। ये कोरे शुष्क तार्किक ही नहीं थे, प्रत्युत साधनाजगत् के गुह्य रहस्यों के मर्मज्ञ साधक भी थे।[2]

अभिनवगुप्त के आविर्भावकाल का पता उन्हीं के ग्रंथों के समयनिर्देश से भली भाँति लगता है। इनके आरंभिक ग्रंथों में क्रमस्तोत्र की रचना 66 लौकिक संवत् (991 ई.) में और भैरवस्तोत्र की 68 संवत (993 ई.) में हुई। इनकी ईश्वर-प्रत्यभिज्ञा-विमर्षिणी का रचनाकाल 90 लौकिक संवत् (1015 ई.) है। फलतः इनकी साहित्यिक रचनाओं का काल 990 ई. से लेकर 1020 ई. तक माना जा सकता है। इस प्रकार इनका समय दशम शती का उत्तरार्ध तथा एकादश शती का आरंभिक काल स्वीकार किया जा सकता है।[3]

वंश परिचय

ऐसा माना जाता है कि कन्नौज के प्रब्रजित शैव मनीषी अविगुप्त, अभिनवगुप्त के प्रथम पूर्वज हैं। उसके अनन्तर लगभग डेढ़ सौ वर्ष तक का कालखंड उस वंश परम्परा के विषय में मौन सा है। इसके पितामह वराहगुप्त का जन्म ईसा की दसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में माना जाता है। उनके पिता नरसिंह गुप्त उर्फ चुखुलक अत्यन्त मेधावी विद्वान, सर्वशास्त्रविद तथा परम शिव भक्त थे। उनकी माता विमलकला परमसाध्वी एवं धार्मिक महिला थीं। दुर्भाग्य से उनकी छाया इनके ऊपर से बचपन में ही उठ गई। माता-पिता के अतिरिक्त उनके परिवार में एक पितृव्य थे वामनगुप्त तथा एक अनुज